सत्यमेव जयते

69वीं गणतंत्र दिवस परेड

69th Republic Day Parade

26 जनवरी, 2018 (माघ 6, 1939)

26 January, 2018 (6 Magha, 1939)

अमर
जवान

सत्यमेव जयते

69वीं गणतंत्र दिवस परेड
69th Republic Day Parade

26 जनवरी, 2018 (माघ 6, 1939)
26 January, 2018 (6 Magha, 1939)

आसियान–भारतः 25 सालों की साझेदारी

आज भारत अपना 69वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। आज हमारे इस विशेष अवसर में हमारी खुशियों में शामिल होने के लिए आसियान सदस्य देशों के नेतागण हमारे सम्मानित अतिथि यहाँ मौजूद हैं। ब्रुनेई दार्रुसलाम के महामहिम सुल्तान हाजी हस्सानाल बोलकियाह मुईजाद्दीन वडउलह इब्नी अल–मरहूम सुल्तान हाजी ओमर अली सैफुदीन सादुल खैरी वादियान सुल्तान और ब्रुनेई दार्रुसलाम के यांग दी–पर्तुआन, इंडोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री जोको विडोडो, फिलिपीन गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री रॉड्रिगो रोआ ड्यूटर्टे, कम्बोडिया अधिराज्य के प्रधानमंत्री महामहिम श्री समदेक अक्का मोहा सेन पदेइ टेको हुन सेन, सिंगापुर गणराज्य के प्रधानमंत्री महामहिम श्री ली सिएन लूंग, मलेशिया के प्रधानमंत्री माननीय दातो श्री मोहम्मद नजीब बिन तुन अब्दुल रजाक, थाईलैंड अधिराज्य के प्रधानमंत्री जनरल प्रायुत चान–ओ–चा, म्यांमार संघ गणराज्य के राजकीय परामर्शदाता महामहिम दाओ आंग सान सू की, वियतनाम समाजवादी गणराज्य के प्रधानमंत्री महामहिम श्री गूएन जुआन फूक, लाओ जनवादी लोकतांत्रिक गणराज्य के प्रधानमंत्री महामहिम डॉ. थोंगलून सिसोलिथ का हार्दिक स्वागत है।

गणतंत्र दिवस परेड के इस समारोह में आसियान देशों के 10 नेतागणों की गरिमामयी उपस्थिति इस बात का द्योतक है कि आसियान और भारत परस्पर सम्मान और सहयोग की नींव पर खड़ी अपनी भागीदारी को कितना महत्व देते हैं।

इस चिरकालिक भागीदारी की भावना के अनुरूप आज की परेड में आसियान और उसके 10 सदस्य राष्ट्रों के राष्ट्रीय ध्वजों का अनूठा प्रदर्शन शामिल होगा। इस भव्य परेड में दो सांस्कृतिक झाँकियां और बच्चों द्वारा नृत्य भी प्रस्तुत किया जाएगा जो भारत और आसियान के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक एवं सभ्यतामूलक संबंध प्रदर्शित करेंगे।

ASEAN–India: 25 Years of Partnership

Today India celebrates its 69th Republic Day. Sharing our joy on this special occasion today, are our esteemed Guests, the Leaders of the ASEAN member countries. A hearty welcome to His Majesty Sultan Haji Hassanal Bolkiah Mu'izzaddin Waddaulah Ibni Al-Marhum Sultan Haji Omar 'Ali Saifuddien Sa'adul Khairi Waddien Sultan and Yang Di-Pertuan, Sultan of Brunei Darussalam, Mr. Joko Widodo, President of the Republic of Indonesia, Mr. Rodrigo Roa Duterte, President of the Republic of Philippines, Samdech Akka Moha Sena Padei Techo Hun Sen, Prime Minister of the Kingdom of Cambodia, Mr. Lee Hsien Loong, Prime Minister of the Republic of Singapore, Dato' Sri Mohd Najib Bin Tun Abdul Razak, Prime Minister of Malaysia, General Prayut Chan-o-Cha (Ret.), Prime Minister of the Kingdom of Thailand, Daw Aung San Suu Kyi, State Counsellor of the Republic of the Union of Myanmar, Mr. Nguyen Xuan Phuc, Prime Minister of the Socialist Republic of Vietnam, Mr. Thongloun Sisoulith, Prime Minister of the Lao People's Democratic Republic.

The august presence of ten ASEAN leaders at the Republic Day Parade signifies the importance that ASEAN and India attach to their partnership that is built on mutual respect and cooperation.

To mark the spirit of this enduring partnership, the Parade today will feature a unique display of the flags of ASEAN and its ten member States. The Parade will also feature two cultural tableaux and a dance display by school children, which will portray the deep cultural and civilizational linkages between India and ASEAN.

कार्यक्रम

0957 बजे	राष्ट्रपति का आगमन।
	प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति की अगवानी।
	प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।
	राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री तथा सेनाध्यक्षों का मंच की ओर प्रस्थान।
	राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।
	गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।
	सांस्कृतिक झांकी।
	मोटरसाइकिल पर करतब।
	विमानों द्वारा सलामी।
	राष्ट्रीय सलामी।
	राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

Programme

0957 hrs.	The President arrives in State.
	The Prime Minister receives the President.
	The Prime Minister presents to the President, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, three Service Chiefs and Defence Secretary.
	The President, the Prime Minister, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri and Service Chiefs proceed to the rostrum.
	The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.
	The Republic Day Parade commences.
	The Cultural Pageant.
	Motor Cycle Display.
	Fly past.
	National Salute.
	The President departs in State.

परेड क्रम

हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप–कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

आसियान ध्वजधारक सैन्य टुकड़ी

भारतीय सेना की टुकड़ी आसियान एवं 10 आसियान देशों के ध्वज के साथ

सेना

सवार दस्ते

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

टैंक टी–90

बाल्बवे मशीन पिकेट (II/IIके)

ब्रह्मोस

शस्त्र खोजी रडार स्वाति

सेतु निर्माण टैंक (बीएलटी) टी–72

मोबाइल बेस ट्रांससीवर स्टेशन (मोब बीटीएस)

आकाश

उन्नत हल्के हेलीकॉप्टरों (एएलएच) द्वारा सलामी

The Order of March

Showering of Flower Petals

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashoka Chakra Awardees

ASEAN Flag Bearer Contingent

Indian Army contingent bearing Flags of ASEAN and 10 ASEAN countries

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

Tank T-90

Ballway Machine Pikate (II/IIK)

BRAHMOS

Weapon Locating RADAR SWATHI

Bridge Layer Tank (BLT) T-72

Mobile Base Transceiver Station (Mob BTS)

AKASH

Fly Past by Advanced Light Helicopters (ALH)

मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ियां

पंजाब रेजिमेन्ट केन्द्र की सैन्य टुकड़ी

पैरा रेजिमेन्ट केन्द्र : बैंड धुन
मद्रास रेजिमेन्ट केन्द्र "अतुल्य भारत"

मराठा लाइट रेजिमेन्ट केंद्र की सैन्य टुकड़ी

डोगरा रेजिमेन्ट केन्द्र की सैन्य टुकड़ी

मराठा लाइट इंफैन्ट्री : बैंड धुन
रेजिमेन्टल केन्द्र "भारत महान"
राजपूताना राइफल्स रेजिमेन्टल केन्द्र

लद्दाख स्काउट्स रेजिमेन्टल केन्द्र की सैन्य टुकड़ी

तोपखाना केन्द्र (नासिक रोड) की सैन्य टुकड़ी

राजपूत रेजिमेन्टल केन्द्र : बैंड धुन
असम रेजिमेन्टल केन्द्र "गोपालपुर के वीर"

प्रादेशिक सेना की सैन्य टुकड़ी (ग्रिनेडियर्स)

भूतपूर्व सैनिकों की झाँकी

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड : बैंड धुन
नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी "जय भारती"

झाँकी (भारतीय नौसेना–
राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए युद्धक रूप से तैयार)

Marching Contingents

Punjab Regiment Centre Contingent

Para Regiment Centre : Band playing
Madras Regiment Centre "Athulya Bharat"

Maratha Light Regiment Centre Contingent

Dogra Regiment Centre Contingent

Maratha Light Infantry : Band playing
Regimental Centre "Bharat Mahan"
Rajputana Rifles Regimental Centre

Ladakh Scouts Regimental Centre Contingent

Artillery Centre (Nasik Road) Contingent

Rajput Regimental Centre : Band playing
Assam Regimental Centre "Gopalpur ke Veer"

Territorial Army Contingent (Grenadiers)

Veterans' Tableau

Navy

Naval Brass Band : Band playing
Navy Marching Contingent "Jai Bharati"

Tableau (Indian Navy –
Combat Ready for National Security)

वायु सेना

वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : वायु सेना : बैंड धुन "साउंड बैरियर"

झाँकी
(भारतीय वायु सेना स्वदेशीकरण को प्रोत्साहित करते हुए)

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

निर्भय मिसाइल प्रणाली

अश्विनी रडार

अर्ध–सैनिक एवं अन्य सहायक बल

सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ी

बैंडः सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन "दे शिवा वर मोहे"

सीमा सुरक्षा बल के ऊँटों की टुकड़ी

बैंड : सीमा सुरक्षा बल के ऊँट : बैंड धुन "हम हैं सीमा सुरक्षा बल"

तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंडः सशस्त्र सीमा बल : बैंड धुन "जोश भरा है सीने में"

सशस्त्र सीमा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंडः भारत–तिब्बत सीमा पुलिस : बैंड धुन "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा"

भारत–तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंडः दिल्ली पुलिस : बैंड धुन "दिल्ली पुलिस गान"

दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

Air Force

Air Force Marching Contingent

Air Force Band : Band playing "Sound Barrier"

Tableau
[Indian Air Force Encouraging Indigenization]

Defence Research & Development Organisation

Nirbhay Missile System

Ashwini Radar

Para-Military and other Auxiliary Forces

BSF Contingent

BSF Band : Band paying "De Shiva Var Mohe"

BSF Camel Contingent

BSF Camel Band : Band Playing "Hum Hain Seema Suraksha Bal"

Coast Guard Marching Contingent

SSB Band : Band playing "Josh Bhara Hai Seene Mein"

SSB Marching Contingent

ITBP Band : Band playing "Sare Jahan Se Achha Hindustan Hamara"

ITBP Marching Contingent

Delhi Police Band : Band playing "Delhi Police Anthem"

Delhi Police Marching Contingent

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन सी सी)

National Cadet Corps (NCC)

बैंडः छात्र (एनसीसी)	: बैंड धुन "कदम–कदम बढ़ाए जा"	Band : Boys (NCC)	: Band playing "Kadam Kadam Badhaye Ja"
छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी		Boys' Marching Contingent	
बैंडः छात्राएं (एनसीसी)	: बैंड धुन "सारे जहाँ से अच्छा"	Band: Girls (NCC)	: Band playing "Sare Jahan Se Achha"
छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी		Girls' Marching Contingent	

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन एस एस)

National Service Scheme (NSS)

सामूहिक पाइप एवं ड्रम बैंड	: बैंड धुन "केसरिया बना"	Massed Pipes & Drums Band	: Band playing "Kesharia Bana"
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी		National Service Scheme Marching Contingent	

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झाँकियां : तेईस

वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

बच्चों की प्रस्तुति

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम :

1. रानी चेन्नमा सर्वोदय कन्या विद्यालय, जहांगीरपुरी, दिल्ली
2. माउंट आबू पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली
3. दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर, महाराष्ट्र
4. उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर, नागालैण्ड
5. ऑक्सफोर्ड फाउंडेशन स्कूल, नजफगढ, दिल्ली

मोटर साइकिलों पर करतब : सीमा सुरक्षा बल

विमानों द्वारा सलामी*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारत मौसम विज्ञान विभाग

*मौसम अनुकूल रहने पर

Cultural Pageant

Tableaux : Twenty Three

Bravery Award Winning Children

National Bravery Award Winning Children in open Jeeps

Children's Pageant

School Children Items:

1. Rani Chennamma Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Jahangirpuri, Delhi
2. Mount Abu Public School, Rohini, Delhi
3. South Central Zone Cultural Centre, Nagpur, Maharashtra
4. North East Zone Cultural Centre, Dimapur, Nagaland
5. Oxford Foundation School, Najafgarh, Delhi

Motor Cycle Display : BSF

Fly-Past*

Release of Balloons : India Meteorological Department

**If weather conditions permit*

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 69वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत का प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झाँकियों का वर्ण–विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी पहलुओं का चित्रण करता है। इन झाँकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India celebrates its 69th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilization, cultural diversity and progress; it symbolises both India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India, capturing both the beauty of our landscape and our architectural heritage.

रेडियो–आशा की किरण

आकाशवाणी की झाँकी में लोक सेवा के क्षेत्र में आठ दशकों से भी अधिक की इसकी ऐतिहासिक यात्रा, देश की सामाजिक–सांस्कृतिक और भाषायी धरोहर को बढ़ावा देने और संरक्षण देने एवं इसकी समकालीन भूमिका को दिखाया गया है।

झाँकी के अग्रभाग में ऐतिहासिक अवसर, जिसमें भारत के बंटवारे के पश्चात् साम्प्रदायिक दंगों और उन्माद के माहौल में आकाशवाणी के माध्यम से महात्मा गांधी द्वारा अपने पहले सम्बोधन के प्रसारण को दर्शाया गया है। इस भाग के पश्चात् झाँकी में किसानों को खेती करते समय रेडियो सुनते हुए, सैनिकों को सरहद पर आकाशवाणी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'जयमाला' सुनते हुए दिखाया गया है। इसमें समुदाय को 'मन की बात', जो माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा देश के नागरिकों के साथ प्रत्येक माह मन से मन की बात है, सुनते हुए दिखाया गया है। इसके मध्य भाग में भारतीय संगीत की दुनिया की महान हस्तियों को दिखाया गया है। झाँकी के अंतिम भाग में आकाशवाणी के वृंदगान (सामुदायिक गान) की महान परम्परा और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाने के लिए आकाशवाणी के मोबाइल–एप को दिखाया गया है। आकाशवाणी के आदर्श वाक्य 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय' को दर्शाते हुए इसके प्रतीक चिन्ह के साथ आकाशवाणी के मोनोग्राम को अंत में प्रदर्शित किया गया है।

–आकाशवाणी

Radio–That Radiates Hope

The tableau of Akashvani showcases its historic journey of more than eight decades in the domain of public service, promotion and preservation of socio-cultural and linguistic heritage of the country and its contemporary role.

The tableau in the front portion depicts the historic event when Mahatma Gandhi made his maiden broadcast through All India Radio in the wake of the communal riots and frenzy following the partition. The portion after this showcases farmers listening to radio while engrossed in agricultural operations, soldiers listening to popular programmes of AIR like 'Jaimala' from advance locations on frontier; it also shows community listening of 'Mann Ki Baat', a heart to heart monthly conversation by the Hon'ble Prime Minister with the citizens. The middle portion showcases luminaries from the world of Indian music. The rear portion depicts AIR's rich tradition of Vrinda Gaan (community singing), and the mobile app of All India Radio to showcase the modernization process. The monogram of AIR with its logo depicting the motto of AIR 'Bahujanhitaaya Bahujansukhaaya' is displayed at the end.

–ALL INDIA RADIO

आसियान–भारत संबंध के 25 वर्ष:
साझा मूल्य, समान लक्ष्य, शिक्षा और व्यापार

आसियान–भारत की झाँकी भारत और आसियान देशों को जोड़ने वाली शक्ति के रूप में शैक्षिक, ऐतिहासिक और सभ्यता की कड़ियों को दर्शाती है।

आसियान देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक और सभ्यता की कड़ियाँ समुद्री यात्रियों, राजाओं, व्यापारियों, विद्वानों, धार्मिक लोगों, राजदूतों और अन्य व्यक्तियों द्वारा की गई समुद्री यात्राओं के माध्यम से जुड़ी थीं। समुद्रों ने न केवल समुदायों को आपस में जोड़ा बल्कि विचारों के आपसी आदान–प्रदान और कला, धर्म, भाषा और शासनकला की जानकारियों का भी आदान–प्रदान करने की सुविधा प्रदान की। आज भी ओडिशा में आयोजित होने वाले "बाली जात्रा" वार्षिक उत्सव में समुद्र में यात्रा करने वाले बहादुर व्यापारियों और नाविकों का स्मरण किया जाता है और उन्हें श्रद्धांजली दी जाती है।

झाँकी के आगे के हिस्से में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय, जो शिक्षा और बौद्ध अध्ययन के लिए एक विश्व–प्रसिद्ध केन्द्र था, का चित्रण किया गया है। दक्षिणी पूर्वी एशिया से कई विद्यार्थियों ने इस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। श्रीविजय राजाओं में से एक बलपुत्रदेव ने श्रीविजय के विद्यार्थियों के लिए नालन्दा में एक मठ का निर्माण किया था। झाँकी के पिछले भाग में "बाली जात्रा" को दर्शाया गया है। किनारे की पट्टियों में आसियान देशों के बाजारों, जहाँ वस्तुओं का व्यापार किया जाता था, को दिखाया गया है।

–विदेश मंत्रालय

ASEAN-India at 25:
Shared Values, Common Destiny, Education and Trade

The ASEAN-India tableau portrays educational, historical and civilizational links as the binding force between India and ASEAN countries.

India's historical and civilizational links with ASEAN countries were forged through maritime voyages undertaken by adventurers, kings, merchants, savants, religious men, royal emissaries and others. The seas not only connected community but also facilitated the cross-pollination of ideas and art, religion, language and statecraft. Till date the annual festival of 'Bali Jatra' held in Orissa commemorates the memory and pays tribute to the brave traders and voyagers who undertook voyages across the seas.

The front portion depicts the ancient Nalanda University, which was a world-renowned centre for learning and Buddhist Studies. Several students from South East Asia studied at this university. One of the Srivijaya Kings, Balaputradewa, in fact, built a monastery in Nalanda for students from Srivijaya. The rear portion of the tableau portrays the 'Bali Jatra'. The fascias depict the markets of ASEAN countries where commodities were traded.

-MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

आसियान–भारत सम्बन्ध के 25 वर्ष:
साझा मूल्य, समान लक्ष्य, संस्कृति तथा धर्म

आसियान–भारत की दूसरी झाँकी भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच धर्म को सबसे सुदृढ़ संपर्कों में से एक के रूप में प्रदर्शित करती है।

बौद्ध भिक्षु भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच यात्राएं करते थे। अन्य राजाओं में सम्राट अशोक ने बौद्ध दूतों को म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम के साथ–साथ मलय प्रायद्वीप भेजा था। प्राचीन काल से 12वीं शताब्दी तक हिन्दू धर्म समूचे दक्षिण–पूर्व एशिया में जीने का तरीका के रूप में व्याप्त था। समूचे आसियान क्षेत्र में हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण तत्त्व उसकी वास्तुकला, कलाओं, मूर्तिकला, नृत्य, नाटक तथा साहित्य का समावेशन है।

प्रस्तुत झाँकी के अग्रभाग में बोध गया में महाबोधी मंदिर और बोधी वृक्ष को दर्शाया गया है जहाँ पर महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इनको दक्षिण–पूर्व एशिया सहित समूचे विश्व में बौद्ध धर्म मानने वालों के लिए सबसे पवित्र धार्मिक स्थल के रूप में स्थान दिया गया है। आसियान के विभिन्न क्षेत्रों में रामायण के उनके अपने रूपांतर हैं। झाँकी का पार्श्व भाग दक्षिण–पूर्व एशिया की विभिन्न रामायणों के सम्मिश्रण को प्रदर्शित कर रहा है। झाँकी के साथ दस आसियान देशों की युगल जोड़ी पारम्परिक वेश–भूषा धारण किए हुए भारत एवं संबंधित आसियान राष्ट्रों के ध्वज के साथ चल रहे हैं।

–विदेश मंत्रालय

ASEAN-India at 25:
Shared Values, Common Destiny, Culture and Religion

The second ASEAN-India Tableau projects religion as one of the strongest linkages between India and South East Asia.

Buddhist monks exchanged visits between India and South East Asia. Among other kings, Emperor Ashoka sent Buddhist emissaries to Myanmar, Thailand, Cambodia, Vietnam as well as to the Malay peninsula. From the ancient period upto the 12th century, Hinduism permeated throughout South East Asia as a way of life. The entire ASEAN region incorporates significant elements of Hinduism in its architecture, arts, sculpture dance, drama and literature.

The front portion of the tableau portrays the Mahabodhi Temple and Bodhi Tree at Bodhgaya where Gautama Buddha attained enlightenment. These are revered as the holiest shrines for practitioners of Buddhism all over the world, including in South East Asia. Various regions of ASEAN have their own versions of Ramayana. The rear portion of the tableau depicts a mélange of diverse South East Asian Ramayanas. The accompanying element on ground shows couples wearing traditional attire of the ten ASEAN countries and carrying the flags of India and ASEAN countries.

–MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

कर्नाटक के वन्यजीव

अपने कुल क्षेत्रफल के पाँचवें हिस्से में वनाच्छादन वाले राज्य कर्नाटक पर प्रकृति ने सच में अपने उपहारों की बौछार की है, जिसे इस वर्ष की झाँकी में सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पाँच राष्ट्रीय उद्यानों वाले कर्नाटक में 408 बाघों की रिकॉर्ड आबादी है, जो देश में बाघों की कुल संख्या का 70 प्रतिशत है। यहां छः हजार से अधिक हाथी हैं, जो देश में पाए जाने वाले हाथियों की कुल संख्या का पाँचवां हिस्सा है और यहाँ सबसे अधिक संख्या में मकैक बंदरों की प्रजाति पाई जाती है जिनके साथ ही रंग–बिरंगे राष्ट्रीय पक्षी मोर, हॉर्नबिल और किंगफिशर भी पाए जाते हैं, जिन्हें कर्नाटक की झाँकी में प्रदर्शित किया गया है।

झाँकी के अग्र भाग में पेड़ों के ऊपर मकैक बन्दरों को कटहल खाते हुए दिखाया गया हैं, जबकि झाँकी के मध्य में एक पहाड़ी पर आराम फरमाते हुए बाघों को देखा जा सकता है, जो "भारत में बाघों के राज्य" के नाम से प्रसिद्ध कर्नाटक के नाम की महत्ता को अभिव्यक्त करता है तथा इस शानदार वन्य जीव को अपने शिकार पर झपटने को तैयार मुद्रा में भी दिखाया गया है। इस झाँकी के पृष्ठ भाग में जंगली कुत्तों का झुंड, गौर (बाइसन), तेंदुआ, किंगफिशर पक्षी, हाथियों का झुंड और बाँस के पेड़ों की झाड़ में सारसों का दल भी प्रदर्शित किया गया है।

–कर्नाटक

Wildlife of Karnataka

With a fifth of its land mass covered by forests, Karnataka is truly endowed with nature's bounty, which is vividly brought to life in this year's tableau.

Blessed with five national parks, the State has a record number of 408 or around 70% of tigers in the country, 6000 plus pachyderms or a fifth of India's elephant population and the highest number of macaques along with the colourful national bird peacock, hornbills and kingfisher, which are showcased in Karnataka's tableau.

The front portion shows macaques feasting on jackfruits atop the trees. In the middle part, tigers can be seen resting on hilltop, as to signify the State's fame as "India's Tiger State" with the majestic animal set to pounce on its prey. The rear part shows a pack of wild dogs, bison, leopard, kingfisher, a herd of elephants and a swoop of cranes nesting on bamboo groove making up the visual spectacle.

–KARNATAKA

साँची–एक प्रतिष्ठित बौद्धस्थल

यूनेस्को विश्वधरोहर और प्रतिष्ठित बौद्धस्थल, साँची, मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में विदिशा के नजदीक स्थित है। यह बौद्ध केन्द्र महान स्तूप के रूप में विख्यात है जो कि प्राचीनतम स्थापत्य कला का एक उदाहरण है। मूल रूप से इसे ईसा पूर्व तीसरी सदी में सम्राट अशोक के समय बनवाया गया था। साँची स्तूप के चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार अथवा तोरण बनाए गए हैं जिनमें सब एक दूसरे के सामने पड़ते हैं। इन प्रवेश द्वारों पर बुद्ध के जीवन काल और जातक कथाओं में वर्णित उनके पूर्व जन्मों के विभिन्न दृश्यों को उकेरा गया है। स्तूप के नजदीक ही सम्राट अशोक द्वारा एक स्तंभ का निर्माण कराया गया है जिसमें संघ को हानि पहुंचाने वालों के खिलाफ कार्रवाई के बारे में दिशा–निर्देश उकेरे गए हैं।

झाँकी के अग्र–भाग में महात्मा बुद्ध को बोधी वृक्ष के नीचे अपने चार शिष्यों के साथ ध्यान–मुद्रा में बैठे हुए दिखाया गया है। झाँकी के मध्य और पार्श्व भाग में महान स्तूप और इसके प्रवेश द्वार दिखाये गये हैं। महान स्तूप के प्रवेश द्वार पर उकेरे गए बुद्ध के जीवन से संबंधित कथानकों जातक दृश्यों और सम्राट अशोक की प्रतिमा का बारीकी से अंकन किया गया है। स्तूप के दोनों ओर छः बौद्ध भिक्षु "बुद्धम् शरणम् गच्छामि" का मंत्रोच्चारण करते हुए चल रहे हैं।

–मध्य प्रदेश

Sanchi - An Eminent Buddhist Centre

A UNESCO World Heritage Site and an eminent Buddhist Centre, 'Sanchi' is situated near Vidisha in Raisen district of Madhya Pradesh. The Buddhist centre is renowned for great Stupa, which is one of the oldest stone structures. Originally commissioned during the regime of the Emperor Ashoka the Great, the Stupas were built in 3rd century BC. The Sanchi Stupa is encircled by four exquisitely carved gateways or Torans, each one facing one of the four cardinal directions. They depict different scenes from the life of the Buddha and his previous lifetimes described in Jataka tales. Near the Stupa exists a pillar installed by Emperor Ashoka on which instructions were inscribed against those out to harm the Sangh.

In the front part of the tableau, Mahatma Buddha is sitting in meditation under the Bodhi Tree with four of his disciples. The middle and the rear portion show Great Stupa and its entrance gates. On the entrance of the Great Stupa are carved the scenes depicting stories, Jatakas and a statue of Emperor Ashoka. On both sides of the Stupa, six Buddhist monks are chanting "Buddham Sharnam Gachchhami".

–MADHYA PRADESH

त्रिपुरा हस्तशिल्प

प्राचीनकाल से ही त्रिपुरा ने हस्तशिल्प के क्षेत्र में बहुत ख्याति अर्जित की है। त्रिपुरा के बेंत/बाँस से तैयार हस्तशिल्प को अपनी सुंदरता, उत्कृष्टता और अति सुंदर रचनाओं के कारण देश में सर्वोत्तम माना जाता है।

प्रतिभाशाली कारीगर बेंत, बाँस और लकड़ी जैसी साधारण सामग्री से शिल्प की अद्भुत वस्तुओं का निर्माण कर सकते हैं। राज्य की भिन्न–भिन्न संस्कृतियां मिलकर एक अद्वितीय परम्परा को जन्म देती हैं जो बेंत और बाँस से बने कला और शिल्प के कार्यों के माध्यम से सुंदरता से अभिव्यक्त होती है। बेंत और बाँस का त्रिपुरा के लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

झाँकी के अग्रभाग को एक विशाल मयूर के रूप में दर्शाया गया है जिसका विस्तार पूरी झाँकी में है। झाँकी को एक नाव की तरह दिखाया गया है जिसमें विभिन्न प्रकार के बाँस से तैयार वस्तुओं को रखा गया है, साथ ही एक बाँस के घर को दर्शाया गया है। इसके अलावा, झाँकी के अग्रभाग में हस्तशिल्प तैयार करते कारीगरों को भी दिखाया गया है। तत्पश्चात, रंग–बिरंगे बिजू नृत्य की प्रस्तुति और पृष्ठ भाग में परम्परागत पोशाक और गहनों में एक त्रिपुरी युवती को चप्पू के साथ दर्शाया गया हैं। साइड के पैनलों में विभिन्न प्रकार की हस्तशिल्प सामग्री जैसे हैंडन, फूलदान, फलों का कटोरा, सजाया हुआ मोर इत्यादि को चित्रित किया गया है।

–त्रिपुरा

Tripura Handicrafts

From times immemorial, Tripura has carved out a name for itself in the field of Handicrafts. Cane/Bamboo handicrafts of Tripura are acknowledged to be among the best in the country, due to their beauty, elegance and exquisite designs.

The gifted artisan could produce wonderful objects of craft from simple material like cane, bamboo and wood. The unique culture of the State together gave shape and content to a unique tradition that found eloquent expression through unique work of art and crafts made out of cane and bamboo. Cane & Bamboo occupy a distinct place in the life of Tripura.

The front portion showcases a huge form of peacock which extends throughout the tableau resembling a boat carrying various bamboo made elements along with a bamboo house. Also in the front portion, some craftsmen producing handicrafts are shown. This is followed by presentation of colourful Bizu dance of Tripura and finally in the rear portion, a Tripuri belle in traditional dress and ornaments are shown with an oar by the side. The side panels depict different kinds of handicraft items like Handan, flower vase, fruit bowl, decorated peacock etc.

–TRIPURA

ग्रामीण पर्यटन

देवभूमि उत्तराखंड में मनमोहक प्राकृतिक दृश्य तथा संस्कृति प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। युवा हिमालयी उत्तराखंड राज्य में ग्रामीण पर्यटन के लिए अपार संभावनाएं मौजूद हैं। यहां का ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति तथा विरासत के अनुपम एवं अदभुत आयाम पर्यटकों को अपनी ओर अत्यधिक आकर्षित करते हैं।

ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उत्तराखंड के अनेक ग्रामों में "होम स्टे" योजना प्रारंभ की गई है। गांवों में संरचनात्मक विकास तथा पर्यटन के संवर्धन के परिणाम उत्साहवर्धक रहे हैं। इससे रोजगार के नवीन एवं बेहतर अवसर उपलब्ध कराने और सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के अलावा प्रवसन जैसी जटिल समस्याओं को हल करने में सहायता मिली है।

झाँकी के अग्रभाग में महिला जनसमूह को परम्परागत लकड़ी की शिल्पकारी तथा डिजाइनों के साथ पर्यटकों का स्वागत करते हुए प्रस्तुत किया गया है। झाँकी के मध्य भाग में इन महिलाओं को पारम्परिक नृत्य करते हुए, पर्यटकों के साथ जैव–विविधताओं तथा पर्यटकों के आवागमन के साथ चित्रित किया गया है। झाँकी के पार्श्व भाग में हस्तशिल्प के साथ "होम स्टे" संकल्पना, भवन डिजाइनों, ध्यान आसन तथा बर्फ से आच्छादित पर्वतों के दृश्य को दर्शाया गया है।

–उत्तराखंड

Rural Tourism

Beautiful sights of nature and culture are found in abundance in Dev Bhumi Uttarakhand. The young Himalayan Uttarakhand state has an immense potential for rural tourism. Its rural life, art, culture and unique and wonderful dimensions of heritage attract the tourists very much.

With the view to encourage village tourism, 'Home stay' Scheme has been started in many Uttarakhand villages. Results of infrastructural development and promotion of tourism in the villages are encouraging. It has helped in tackling serious problems like migration apart from promoting socio-economic development providing new and better opportunities for employment.

On the front side of the Tableau, women folk in traditional wooden crafts and designs have been displayed welcoming tourists. On the middle side, these women have seen shown performing traditional dance, biodiversities with tourist, and movement of tourists. The rear side shows home stay concept with handicrafts, building designs, meditation and snow covered mountains.

–UTTARAKHAND

जम्मू–कश्मीर के लोगों की आजीविका

जम्मू–कश्मीर के लोगों का मुख्य व्यवसाय 'हस्तशिल्प' और 'कृषि' है। यह राज्य अपने ग्रामीण और लोकजीवन से परिपूर्ण है। जम्मू–कश्मीर की झाँकी में राज्य के सभी तीनों संभागों, अर्थात् जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में निर्मित उत्कृष्ट कलाओं और हस्तशिल्प को दर्शाया गया है।

जम्मू संभाग के कठुआ जिला की पहाड़ी लघु चित्रकला बसोहली, इस क्षेत्र का नाम भारतीय उपमहाद्वीप में दृश्य कलाओं के क्षेत्र में फैलाने में सहायक रहा है। कश्मीर की कनी शाल एक और बहुत ही पुराना हस्तशिल्प है। पश्मीना धागे से बुना जाने वाला यह शिल्प मुगल काल से ही घाटी का हिस्सा रहा है। इसी तरह, लद्दाख क्षेत्र में उच्चकोटि के पश्मीना की बुनाई का एक अहम स्थान है।

झाँकी का अग्रभाग एक शाल विक्रेता को दर्शाता है जो बेल–बूटेदार रूपांकनों और कला के मिनिएचर कार्य से घिरा हुआ है। शेष झाँकी तीन भागों में विभाजित है। शुरुआत में एक कलाकार मिनिएचर पेंटिंग बना रहा है और इस कार्य को दर्शाती एक छोटी प्रदर्शनी है। मध्य भाग में करघे के साथ कनी शाल बुनते हुए और कुछ कशीदाकारों और मण्डलों को कश्मीर क्षेत्र के शाल को प्रदर्शित करते हुए दिखाया गया है। पिछले भाग में लद्दाख के पश्मीना शाल की बुनाई को एक स्थानीय घर के साथ दर्शाया गया है।

–जम्मू और कश्मीर

Livelihood of the People of Jammu and Kashmir

Primary occupations of the people of Jammu and Kashmir are 'Handicrafts' and 'Agriculture'. The State is rich in its rural and folk life. The tableau of Jammu and Kashmir showcases arts and handicrafts produced in all the three regions of the State namely Jammu, Kashmir and Ladakh.

Pahari miniatures from Basohli (Kathua District of Jammu) have been instrumental in spreading name of the region across the Indian subcontinent in the field of visual arts. Kani shawl from Kashmir is another very old handicraft. Woven with Pashmina yarn, this craft has been a part of valley since the time of Mughals. Equally, weaving of Pashmina in Ladakh occupies predominant place.

The front portion of the tableau showcases a shawl seller, surrounded by beautiful paisley motifs and miniature work of art. The other part of the tableau is divided into three parts beginning with an artist making a miniature painting and a small exhibition of this work. The central portion of the tableau shows Kani Shawl weaving with a loom and some embroiders and models displaying shawls of the Kashmir region. In the rear portion, traditional Pashmina weaving from Ladakh has been depicted besides a vernacular house.

–JAMMU AND KASHMIR

छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक

छत्रपति शिवाजी महाराज का राजगढ़ किले के राज सिंहासन पर 06 जून, 1674 को राज्याभिषेक किया गया था। यह राज्याभिषेक समारोह भारत के इतिहास में एक विशिष्ट अवसर है। इस समारोह में शताब्दियों के पश्चात एक हिंदु राजा का प्रभुसत्ता–सम्पन्न राजा के रूप में राज्याभिषेक किया जाता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म पुणे जिले के शिवनेरी किले में हुआ था। उन्होंने उन दिनों अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया और माता जीजाबाई के सफल मार्गदर्शन में उनका दृढ़तापूर्वक समाधान कर "स्वराज" की स्थापना की थी।

झाँकी के अग्र भाग में शिवाजी महाराज की घोड़े पर सवार प्रतिमा का चित्रण किया गया है। प्रतिमा के दोनों तरफ उनके वफादार सैनिकों और अधिकारियों को किले की अपराजेय दीवारों के दोनों किनारों पर सम्मानस्वरूप खड़े हुए प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के मध्य भाग में स्वपरिक्रमी तुला का चित्रण किया गया है जो सच्चे न्याय का प्रतीक है। परिक्रमी तराजू के चारों ओर भालाधारक सैनिक खड़े हुए हैं। झाँकी के पृष्ठ भाग में राजसिंहासन के ऊपर शिवाजी महाराज विराजमान हैं। सिंहासन के पीछे महाराज की माता को उन्हें आशीर्वाद देते हुए दिखाया गया है। सिंहासन के दोनों तरफ सोइराबाई और संभाजी महाराज की आसन मुद्रा में प्रतिमाओं को प्रस्तुत किया गया है। सोने के कुछ सिक्कों जिन्हें "ऑन" कहा जाता था साथ ही साथ तांबे के सिक्कों जिन्हें "शिवरायी" कहा जाता है, को भी इस दृश्य के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

–महाराष्ट्र

Chhatrapati Shivaji Maharaj Coronation

Chhatrapati Shivaji Maharaj was coronated on 6th June 1674 to the throne of the Rajgad Fort. This coronation ceremony is an exclusive event in the history of India. A Hindu king was coronated as a sovereign king after centuries in this event.

Chhatrapati Shivaji Maharaj was born in the Shivneri fort in the Pune district. He faced adversities caused by situations during those times and resolved them firmly to establish 'Swaraj' under the able guidance of mother Jijabai.

The front side of the tableau shows the statue of Shivaji Maharaj riding a horse. On both sides of the statue are his loyal soldiers and officers standing respectfully and on both ends, the impregnable walls of the fort have been shown. In the middle part, a self-revolving scale, which a symbol of true justice is shown. Surrounding the scale stand soldiers with spears. In the rear part, there is cover above the throne on which Shivaji Maharaj is seated. Behind the throne is Maharaj's mother who is shown showering her blessings. On both sides of the throne are the statues in a sitting posture of Soirabai and Sambhaji Maharaj. Some gold coins called 'Hon' as well as copper coins called 'Shivrayi' can also be seen.

–MAHARASHTRA

लक्षद्वीप–आनंद का द्वीप

झाँकी में लक्षद्वीप के लोगों की अनुपम संस्कृति की झलक पेश की गई है। इस केन्द्र शासित प्रदेश में मत्स्य–पालन की संभावनाओं तथा एक आत्मनिर्भर उद्योग के रूप में इसके महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है।

अरब सागर में सुदूर स्थित मनमोहक द्वीप समूह– लक्षद्वीप, जहां समुद्र की अथाह गहराइयों में भी पानी की लहरें उठती हैं, वह समूह है सम्मोहक सुंदरता वाले मूँगे के द्वीप–अनूपों का और जहां के चमचमाते पारदर्शी पानी में झलकती मूँगे की चट्टानें एक अद्भूत और अलौकिक दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

प्रस्तुत झाँकी के अग्रभाग में द्वीप समूह के जनसाधारण द्वारा मछली पकड़ने के लिए प्रयोग की गई विभिन्न विधियों का चित्रण किया गया है। झाँकी के मध्य भाग में पारम्परिक "ओपन्ना" गान तथा नृत्य समारोह की विशेष रूप से प्रस्तुति है जिसके बिना विवाह समारोह अधूरा माना जाता है। झाँकी के दोनों तरफ पानी के अंदर बहुरूपदर्शी का चित्रण है जिसमें प्रचुर मात्रा में मछलियां नजर आ रही हैं। झाँकी में नारियल के पेड़ों के बीच रेतीले समुद्री तटों और पर्यावरण अनुकूल पर्यटक कुटीर को भी दर्शाया गया है।

–लक्षद्वीप

Lakshadweep - Islands of Joy

The tableau portrays the unique culture of the people of Lakshadweep. The potential of fishing and its significance as a sustainable industry for the Union territory has also been highlighted.

The gorgeous Lakshadweep Islands, located far out in the Arabian Sea, where the waters plunge miles deep into the ocean floor, are a chain of bewitchingly beautiful coral atolls and lagoons blessed with glistening transparent waters and reefs that are deep and shrouded in awe inspiring spectacular mystery.

The front portion of the tableau depicts different kinds of fishing methods used by the island folk for catching fish. Central part of the tableau prominently depicts the traditional "Opanna", a song and dance recital, without which no marriage ceremony is considered complete. The side portions of the tableau display an underwater kaleidoscope comprising an abundance of fish. It also shows sandy beaches and an eco-friendly tourist cottage, all of this amid coconut trees.

–LAKSHADWEEP

रामगढ़ की प्राचीन नाट्यशाला

छत्तीसगढ़ की झाँकी में देश की एक प्राचीन नाट्यशाला को प्रदर्शित किया गया है जो छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में रामगढ़ की पहाड़ियों पर स्थित है। यह प्राचीन नाट्यशाला 300 ईसा पूर्व की है।

इस नाट्यशाला में प्राप्त शिलालेख से पता चलता है कि इस क्षेत्र के राजाओं द्वारा नाटक और नृत्य उत्सव आयोजित किए जाते थे। वसंत पूर्णिमा की रात यहाँ पर काव्य गोष्ठी का आयोजन होता था जिसमें विख्यात कविगण भाग लेते थे। ऐसा कहा जाता है कि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध काव्य 'मेघदूतम' की रचना इसी स्थान पर की थी जिसमें बादलों को प्रेम के दूत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

झाँकी के अगले हिस्से में महान कवि कालिदास को रामगढ़ की पहाड़ियों पर अपने प्रसिद्ध काव्य 'मेघदूतम्' की रचना करते हुए दिखाया गया है जबकि झाँकी के पिछले हिस्से में रामगढ़ की अर्ध–गोलाकार पहाड़ियों को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी में नाट्यशाला के मंच पर नर्तकों को कालिदास के प्रसिद्ध काव्य 'मेघदूतम्' का मंचन करते हुए देखा जा सकता है। नाट्यशाला की दीवारों पर पदचिह्न और शिलालेख भी प्रदर्शित किए गए हैं।

–छत्तीसगढ़

Ramgarh's Ancient Amphitheatre

Chhattisgarh's tableau showcases the country's ancient Amphitheatre situated on the hills of Ramgarh in Chhattisgarh's Sarguja District. The ancient Amphitheatre dates back to 300 B.C.

The inscriptions found in the Amphitheatre indicate that kings who belonged to this region used to organize theatre and dance festivals. Eminent poets would participate in poetry events organized especially on the full moon light of spring season. It is believed that the famous lyrical poem 'Meghadootam', which depicts cloud as the messenger of love, was composed by poet Kalidas in these caves.

The front portion of the tableau presents great poet Kalidas penning down the famous 'Meghadootam' on the Ramgarh hills, while the rear part presents a hemisphere shaped mountain. Dancers could be seen presenting the famous 'Meghadootam' lyrical poem on the stage of this Amphitheatre. Foot prints and inscriptions on the walls of the Amphitheatre have also been showcased.

–CHHATTISGARH

केट्टुकार्चा

केट्टुकार्चा केरल में मंदिर उत्सवों से संबंधित श्रद्धालुओं और कृषक समुदाय की ओर से की जाने वाली एक पूजा है। केट्टुकार्चा की कई विधाएं हैं जैसे एडुप्पू कला, एडुप्पू कुतिरा, कालाकेट्टु आदि। ओचिराकल्ली, जो केरल की मार्शल आर्ट कला का रूप है, का भी प्रदर्शन किया गया है।

केट्टुकार्चा को पुरूषों के कंधों पर रखा जाता है और तालबद्ध नृत्य करते हुए उल्लासपूर्वक जयकारों के साथ जुलूस के रूप में उन्हें मंदिर परिसर में ले जाया जाता है। प्राचीन काल से ही केट्टुकार्चा केरल के लोगों के वास्तुशिल्प और कला कौशल का एक गौरवशाली प्रतीक है। ओचिराकली का आयोजन तत्कालीन शासकों द्वारा लड़े गए युद्ध का स्मरण दिलाने के लिए किया जाता है। इस उत्सव को मनाने और प्राचीन परम्पराओं के गौरव का आनन्द लेने के लिए जलाशय में सांकेतिक लड़ाई की जाती है।

केट्टुकाला (उत्कृष्ट बैलों) के पुतले सामने दिखाई पड़ रहे हैं और उसके पीछे दूसरी वस्तुओं के साथ ऐडुप्पुकुतिरा (घोड़े) दिखाई दे रहे हैं। इन सबके पीछे भव्य प्रवेशद्वार है जिन्हें बैलों के सिरों की आकृति द्वारा सजाया गया है। झाँकी के निचले हिस्से में धान के खेतों में सैन्य कला (मार्शल आर्ट) की जो परम्परा दिखाई दे रही है, वह इस झांकी का प्रमुख आकर्षण है जो केरल की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित कर रहा है ।

–केरल

Kettukazhcha

Kettukazhcha is an offering of devotees associated with the temple festivals and farming community in Kerala. There are many forms of Kettukazhcha like Eduppu Kala, Eduppu Kuthira, Kalakettu, etc. Ochirakkali, the martial art form of Kerala is also showcased.

The Kettukazhachas are supported by male persons on their shoulders and taken out in a procession to the temple premises with loud cheers of joys in rhythmic verses. Kettukazhcha is a sign of the architectural and artistic skills of the people of Kerala in ancient times. Ochirakkali is held to commemorate the battle fought by the then contemporary rulers. Mock fights are staged in muddy waters to mark the celebrations and enjoy the glory of the past traditions.

Dummies of Kettukala (elegant bulls) are seen in the front followed by Eduppukuthira (horse) along with accompaniments following it. Behind all of these the great gateways follow, which are decorated by models of bull's heads. In the lower portion of the tableau, the arena reflecting the martial art traditions in wet paddy fields are the main attraction of the procession which depicts their cultural heritage.

–KERALA

असम के सत्रों के परम्परागत मुखौटे

मुखौटा बनाने की कला को सबसे पहले महापुरूष श्रीमंत शंकरदेव जो असम के बहुत बड़े सन्त, विद्वान, कवि, सामाजिक एवं धार्मिक सुधारक थे, द्वारा 15वीं सदी में शुरू किया गया था ।

यह प्रसिद्ध परम्परागत मुखौटा (मुख) असम के सत्रों (वैष्णव मठों) और नामघरों (प्रार्थना हाल) में धार्मिक नृत्य और नाटक में इस्तेमाल किया जाता है। मुखौटों का इस्तेमाल श्रद्धालुओं के लिए गीता और महाकाव्यों के पात्रों के चित्रण के लिए एक साधन के रूप में किया जाता है। मुखौटे बाँस, बेंत, कपडे, चिकनी मिट्टी, गाय के गोबर और लकड़ी से बनाये जाते हैं।

झाँकी के अग्र भाग में "अग्निगढ़" को दर्शाते हुए 'नरसिंह' की बड़ी प्रतिमा है–अग्निगढ़ वह दरवाजा है जिससे अभिनेता रंगभूमि में प्रवेश करते हैं। झाँकी के निचले और दोनों तरफ के पैनलों में धार्मिक महाकाव्यों के चरित्रों और अभिनय में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न मुखौटों को दर्शाया गया है। इसके केन्द्रीय भाग में किरदारों को दिखाने वाले मुखौटों के साथ अभिनेताओं द्वारा "सीता हरण–बाली वध" विषय पर भाओना (रंगशाला) का सुन्दर प्रदर्शन किया गया है। नातुन कमलाबाड़ी सत्र के बड़े दरवाजे दिखाए गए हैं जिसमें अन्य परम्परागत तत्त्वों के साथ पूरे पिछले हिस्से को ढका गया है। इसमें स्तंभ पर बैठे परम्परागत असम गरूड़ को भी प्रदर्शित किया गया है। इसके पार्श्व पैनलों में धार्मिक महाकाव्यों से विभिन्न चरित्रों के विभिन्न रंगीन मुखौटे दिखाए गए हैं।

–असम

Traditional Masks of the Satras of Assam

Mask making craft was first introduced in the 15th century by Mahapurush Srimanta Sankardeva, the great saint, scholar, poet, social and religious reformer of Assam.

This famous traditional mask (mukha) is used in the religious dance and drama in the Satras (Vaishnava Monasteries) and Namghars (Prayer Hall) of Assam. Masks were used as tool to depict the characters of Gita and Epics, to the devotees. Masks (mukha) are made of bamboo, cane, cloth, clay, cow dung and wood.

The front part of tableau shows a huge "Narasingha" with depiction of "AGNIGARH" – the gate under which the actors have to enter the arena. The lower and side panels depict the different masks used in the performance and characters from the religious epics. The central portion also shows the beautiful performance of Bhaona (theatre) on the subject - "Sita Haran - Bali Badh" by the artists with the masks (Mukha) resembling the characters. The huge entry gate of Natun Kamalabari Satra is shown covering almost the entire rear portion, with other traditional elements. It also shows the traditional Assam Garuda perched on a stambha (pillar). The side panel showcases the different colourful masks of different characters from the religious epics.

–ASSAM

संगत और पंगत

पंजाब की प्रस्तुत झाँकी एक रचनात्मक और व्यापक रूप में संगत और पंगत के वैभव का चित्रण प्रस्तुत करती है।

संगत और पंगत, आदर–सत्कार और सामुदायिक समाज–सेवा की एक आम प्रथा है जिसे प्रथम सिख गुरु श्री गुरुनानक देव जी द्वारा शुरु किया गया था। सामुदायिक भोजन (लंगर) का उद्देश्य एक ही स्थान पर जाति, रंग, पंथ, आयु और सामाजिक स्थिति पर ध्यान दिए बिना लोगों को खाना खिलाना है जो संगत और पंगत के अभिन्न भाग के रूप में "सेवा भाव" को दर्शाता है।

झाँकी के अग्रभाग में एक आदमकद प्रतिमा के रूप में एक सिख को सामुदायिक भोजन (लंगर) तैयार करते हुए प्रदर्शित किया गया है। मध्य भाग में सिखों को लंगर के अंतर्गत श्रद्धालुओं की सेवा करते हुए और भोजन कराते हुए दर्शाया गया है। झाँकी के अंतिम भाग में एक गुरुद्वारे की प्रतिकृति संरचना के साथ पंजाब और पंजाबियों के बीच के संबंध को दर्शाया गया है। दोनों ओर के पैनलों पर संगत और पंगत के भाग के रूप में कुछ महिलाओं और पुरुषों द्वारा रोटी बनाते हुए, बर्तन साफ करते हुए इत्यादि के रूप में संगत और पंगत के कुछ अन्य पहलुओं को दर्शाया गया है।

–पंजाब

Sangat and Pangat

The tableau of Punjab depicts the grandeur of Sangat and Pangat in a creative and comprehensible manner.

The Sangat and Pangat is common mode of obeisance and a community social service that was instituted by the first Sikh Guru, Sri Guru Nanak Dev Ji. The community meal (Langar) aims to feed people on one platform irrespective of caste, colour, creed, age , gender and social status, to depict the 'Seva Bhav' as the integral part of Sangat and Pangat.

The front part showcases a larger than life statue of a Sikh preparing community meal (Langar). The middle part shows Sikhs feeding and serving the visitors under Langar. The rear portion shows a replica structure of a Gurudwara making connection between Punjab and Punjabis. Side panels bring some other aspects of Sangat and Pangat by depicting some women and men making chapattis, cleaning utensils etc. as the part of Sangat and Pangat.

–PUNJAB

कीह गोम्पा

11वीं शताब्दी में स्थापित बौद्ध मठ 'कीह गोम्पा' प्राचीन बौद्ध घुमौवा नक्काशी, चित्रकला, भित्ति चित्रों, दुर्लभ थांकाओं और अति दुर्लभ पांडुलिपि संग्रह के लिए जाना जाता है।

गोम्पा में ध्यान मुद्रा में गौतम बुद्ध की मूर्ति प्रतिष्ठापित हैं। यह लामाओं हेतु एक प्रतिष्ठित धार्मिक प्रशिक्षण केंद्र है और जहाँ लगभग 350 बौद्ध भिक्षु रहते हैं।

झाँकी के अग्रभाग में बुद्ध की ध्यान–मुद्रा की प्रतिमा को दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में स्तूप तथा वहाँ बैठे बौद्ध भिक्षु दर्शाए गए हैं। झाँकी के पिछले भाग में 'कीह गोम्पा' मठ को दर्शाया गया है और झाँकी के साथ बौद्ध भिक्षु मंत्रों का उच्चारण करते हुए चल रहे हैं।

–हिमाचल प्रदेश

Kye Gompa

Kye Gompa, a Buddhist monastery, established in 11th century, is known for ancient Buddhist scrolls, paintings, murals, rare thangkas and manuscript collection.

The images of Gautam Buddha in dhyana (meditation) are enshrined in the Gompa. It is a prominent religious training centre for Lamas and accommodates nearly 350 monks.

The front portion of the tableau shows statue of Buddha in meditation. The middle section of tableau shows stupas and the monks resting there. The rear portion of the tableau shows Kye monastery and the monks accompanying the tableau chanting mantras.

–HIMACHAL PRADESH

खम्बा थोइबी

खम्बा थोइबी, मणिपुर राज्य की एक बहुत ही लोकप्रिय लोकगाथा है। यह मुख्यतः विविध पात्रों और घटनाओं को दर्शाते हुए एक युवा प्रेम–कहानी है जिसमें तत्कालीन समाज और मोइरांग के साम्राज्य की शौर्यपूर्ण जीवन शैली का सजीव चित्रण किया गया है।

खम्बा पौरुष, नम्रता, दयालुता और राजा के प्रति निष्ठा का मूर्त रूप था जबकि राजकुमार की एकमात्र पुत्री थोइबी सुन्दरता, कोमलता, बुद्धि और विश्वास का साकार रूप थी। जिस क्षण थोइबी ने आकर्षक और बेहतरीन डील–डौल वाले खम्बा को देखा उसी क्षण उसे उससे प्रेम हो गया। एक और अन्य युवा जिसका नाम खोंगयाम्बा (मुख्यतः नंगबन के नाम से प्रसिद्ध) था, वह भी थोइबी के लिए ऐसी ही भावनाएं रखता था और इसलिए वह खम्बा का शत्रु बन गया था। इस प्रेम युद्ध में, खोंगयांग और खम्बा को बाघ के शिकार में अपने पराक्रम की परीक्षा देनी थी। खोंगयाम्बा शिकार के दौरान बाघ द्वारा मारा गया और खम्बा ने बाघ को पकड़ लिया और इस प्रकार थोइबी से उसका विवाह हो गया।

झाँकी के अग्र भाग में पेना खोंगबा (अभिनेता) जो परम्परागत रूप से कहानी कहता है देखा जा सकता है। मध्य भाग में खम्बा और थोइबी नृत्य, मुकना (मणिपुरी कुश्ती) और जंगली बैल को पालतू बनाते हुए, खम्बा की एक मूर्ति को दिखाया गया है। पिछले भाग में मोइरांग के राजा और रानी को अन्त में स्थित 'पेफाल' जो पौराणिक देवी–देवताओं का प्रतीक है, की दिशा में अपने–अपने सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है।

–मणिपुर

Khamba Thoibi

Khamba Thoibi, one of the most popular folklore of the State of Manipur, is primarily a story of youthful love, yet throwing up a number of diverse characters and events which depict vividly the then society and heroic life of the kingdom of Moirang.

Khamba is the embodiment of virility, humility, kind-heartedness and loyalty to the King whereas Thoibi, the only daughter of the prince, is the embodiment of beauty, tenderness, wit and faithfulness. The moment Thoibi saw Khamba's handsome and sharp physique, she gave her heart away to him. There was another young man named Kongyamba (popularly known as Nongban) who nursed the same feeling for Thoibi and so became an adversary to Khamba. In this scuffle for love, Kongyamba and Khamba were to test their prowess in a Tiger hunt. Kongyamba was killed by the tiger and Khamba captured the tiger and finally married Thoibi.

The Pena Khongba (player) who traditionally narrates the story is seen in the front portion. In the middle portion, Khamba and Thoibi dance, Mukna (Manipuri wrestling) and one dummy of Khamba taming a wild ox are being displayed. On the rear portion, the King and the Queen of Moirang are sitting on their respective thrones flanked by the 'Paphal', the symbol of ancestral deity, at the extreme end.

–MANIPUR

साबरमती आश्रम की शताब्दी और गाँधी जी

साबरमती आश्रम की स्थापना, साबरमती नदी के किनारे सन् 1917 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने की थी। साबरमती आश्रम के सौ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और पूरा देश इसकी शताब्दी को विशेष प्रेम के साथ मना रहा है।

आश्रम के अंदर "हृदय कुंज" कई वर्षों तक महात्मा गाँधी और कस्तूरबा गाँधी का निवास स्थान रहा है। यह वह स्थान है जहाँ से गाँधी जी को अपने सभी राष्ट्रीय कार्यकलापों को करने की प्रेरणा मिली थी। इसी अवधि के दौरान, लोगों द्वारा मोहनदास गाँधी को "महात्मा गाँधी" के रूप में पहचाना जाने लगा। इसी आश्रम से 1930 में विश्व प्रसिद्ध "दांडी यात्रा" (नमक अभियान) की शुरुआत हुई थी।

गाँधी जी ने संपूर्ण देश में स्थानीय खादी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जिसे "चरखा" से तैयार किया जाता है। इसे प्रतीकात्मक स्वरूप झाँकी के अग्र भाग में दर्शाया गया है। इसके साथ, शांत मुद्रा में गाँधी जी के तीन बंदरों को भी दर्शाया गया है। इस झाँकी में प्रथम सत्याग्रही–"विनोबा जी की कुटीर" और आश्रम के हृदय स्वरूप "हृदय कुंज" को विशिष्ट रूप में प्रदर्शित किया गया है। आश्रम के विविध कार्यकलापों जैसे कि प्रार्थना, सेवा, बालिका शिक्षा और स्वच्छता, पत्रिका प्रकाशन, हस्तनिर्मित कागज के निर्माण को प्रस्तुत किया गया है। गाँधी जी की दांडी यात्रा को एक भित्ति चित्र के रूप में दर्शाया गया है।

–गुजरात

Century of Sabarmati Ashram and Gandhiji

Mahatma Gandhi, father of the nation, had set up Sabarmati Ashram on the banks of river Sabarmati in 1917. Sabarmati Ashram has completed 100 years and its century is being celebrated all over the country with great love.

The "Hriday kunj" inside the Ashram remained the residence of Mahatma Gandhi and Kasturba Gandhi for years. This place was the inspiration for Gandhiji to carry out all his National activities. During this period, people started to recognise Mohandas Gandhi as "Mahatma Gandhi". The world famous "Dandi Yatra" (Salt March) started in 1930 from this Ashram.

Gandhiji promoted the use of local khadi which was made by using "Charkha" (spinning wheel) in the entire country. This is shown on front part of the tableau in symbolic form. Along with this, the three monkeys of Gandhiji are also shown in relief form. On the tableau, the first practitioner of Satyagraha-"Vinobaji's Kutir" (Hut) and "Hriday Kunj", which is considered as the heart of ashram, are represented in specific form. Ashram's various activities like prayer, service, girl education, cleanliness, magazine printing and handmade paper making are presented here. Gandhiji's Dandi yatra is represented in a mural form.

–GUJARAT

राष्ट्र की सेवा में भारत–तिब्बत सीमा पुलिस

भारत–तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) की झाँकी इस बल के पराक्रम को प्रदर्शित करती है जिसे इसकी वीरता, समर्पण, संक्रियात्मक क्षमता, सतत् परिश्रम और शारीरिक क्षमता के लिए जाना जाता है।

1962 में गठित आईटीबीपी बल, एक बहु–आयामी बल है जिसे सबसे दुर्गम भू–भागों में सबसे कठिन कार्य निष्पादित करने के लिए जाना जाता है जहाँ ऊँचाई 18,700 फुट से अधिक है और तापमान शून्य से 45 डिग्री सेल्सियस तक नीचे गिर जाता है। आईटीबीपी बड़ी बहादुरी और चौकसी से 3488 कि.मी. की भारत–चीन सीमा की निगरानी करती है।

झाँकी के अग्रभाग में चीन–भारत की सीमा की सुरक्षा में आईटीबीपी की प्रमुख भूमिका को दिखाते हुए दो आईटीबीपी जवानों को स्नो–स्कूटर पर गश्त करते हुए दर्शाया गया है। इसमें आईटीबीपी का विशिष्ट उच्च प्रशिक्षित पर्वतीय युद्ध बल के रूप में भी चित्रण किया गया है। आईटीबीपी बचाव–दल को बचाव अभियानों को अंजाम देते हुए देखा जा सकता है। इस भाग में आईटीबीपी की जल शाखा को भी दर्शाया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में दो आईटीबीपी जवानों को बर्फ से ढकी चोटियों पर भारतीय झंडे को फहराते हुए दिखाया गया है जबकि कुछ आईटीबीपी जवानों को बर्फीले क्षेत्र में गश्त करते हुए दिखाया गया है।

–भारत-तिब्बत सीमा पुलिस

ITBP in Service of the Nation

The tableau of Indo-Tibetan Border Police (ITBP) displays the prowess of this elite force, well known for its gallantry, dedication, operational capability, perseverance and physical fitness.

Raised in 1962, the ITBP is a multi-dimensional force, known to execute the most daunting tasks in the most inhospitable terrain where the temperature goes down to minus 45°C and the height to over 18700 feet. ITBP bravely and vigilantly guards 3488 Km of the Indo-China Border.

The front part showcases two ITBP soldiers patrolling on a snow scooter to depict the key role of ITBP in securing the border along the Sino-Indian frontier. It also depicts ITBP as a specialized, highly trained mountain warfare force. ITBP rescuers can be seen carrying out the rescue operation. The ITBP-Water Wing is also showcased in this portion. In the rear portion, two ITBP personnel are displayed unfurling the Indian flag on a snow capped peak, while some ITBP personnel are shown patrolling along the snowy range.

–INDO-TIBETAN BORDER POLICE

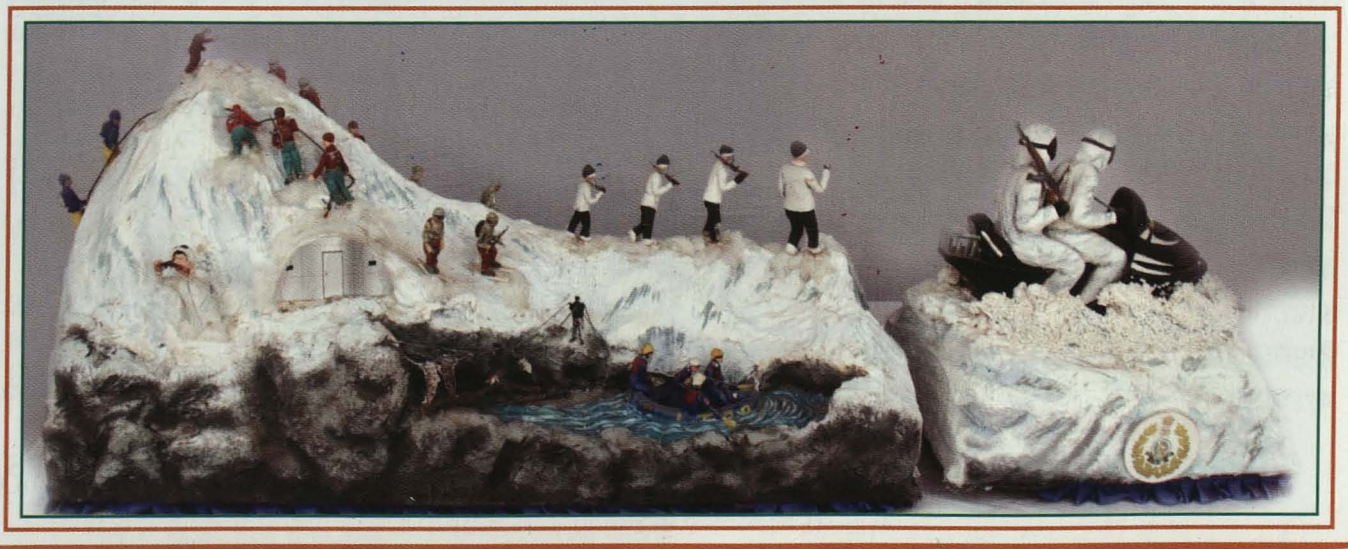

उचित दाम हक से मांग

जनजातीय कार्य मंत्रालय की झाँकी में आदिवासियों की सुरक्षा के रूप में कार्यान्वित की गई लघु वन उत्पाद (एमएफपी) क्षेत्र हेतु एक ऐतिहासिक योजना को दर्शाया गया है। "लघु वन उत्पाद हेतु न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और कीमत संवर्द्धन" नामक योजना आदिवासी लोगों की आय में उचित और लाभकारी मूल्यों में पर्याप्त वृद्धि को सुनिश्चित करता है।

झाँकी के अग्रभाग में हाट बाजार में एक परम्परागत आदिवासी महिला को लघु वन उत्पाद बेचते हुए दिखाया गया है, जिससे उनके जीवन में लघु वन उत्पादों और हाट बाजारों के महत्त्व का पता चलता है। मध्य भाग लघु वन उत्पाद का मूल्य संवर्द्धन दर्शाता है, जो आदिवासियों की आय में वृद्धि हेतु बहुत आवश्यक है। झाँकी का अंतिम भाग "लघु वनोपज प्रसंस्करण केंद्र" के द्वारा अगले स्तर के कीमत संवर्द्धन को दर्शाता है जिसमें पीपीपी मोड के अंतर्गत वन उत्पादों के तृतीय प्रसंस्करण, फिनिशिंग, पैकेजिंग और ब्रांडिंग बड़े स्तर पर कृत्रिम इकाईयों के तहत किया जाना है। अंतिम भाग "आदिवासी भारत" आउटलैट्स को भी दर्शाता है जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में आउटलेट, ई–कामर्स इत्यादि के द्वारा आदिवासी हैंडलूम/हथकरघा हेतु बाजार अवसर पैदा करने हेतु महत्वपूर्ण है।

–जनजातीय कार्य मंत्रालय

Uchit Dam Hak Se Mang

Ministry of Tribal Affairs' tableau showcases a landmark scheme for Minor Forest Produce (MFP) Sector implemented as a safety net for tribals. The scheme namely "Minimum Support Price (MSP) and Value Addition for Minor Forest Produce" ensures fair and remunerative prices to substantially enhance income of tribal people.

The front portion of the tableau presents the image of a traditional tribal lady selling MFPs at Haat Bazaar signifying importance of MFP and Haat Bazaar in their lifestyle. Middle portion shows value addition of MFP which is very critical for enhancing the income of tribals. Rear portion shows the next level of value addition planned through "Laghu Vanopaj Prasanskaran Kendras"which are proposed to be large sophisticated units undertaking tertiary processing, finishing, packaging and branding of forest produces under PPP mode. Rear portion also presents "TRIBES INDIA" outlets which signifies creation of marketing opportunity for tribal handloom/handicrafts through outlets, e-commerce etc. in national and international markets.

–MINISTRY OF TRIBAL AFFAIRS

खेलो इंडिया

खेल विभाग, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय ने वर्ष 2017–18 में "खेलो इंडिया" कार्यक्रम की शुरुआत की है।

खेलो इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य देश में शिक्षा के साथ खेलों का एकीकरण और इसको व्यापक आयाम प्रदान करना है जिससे अंततः खेल में उत्कृष्टता की प्राप्ति होती है। खेलो इंडिया कार्यक्रम में खेल संरचना का सृजन, कोच विकास, खेल प्रतिभाओं की पहचान और प्रोत्साहन, खेल प्रतियोगिताओं की मेजबानी, स्कूली बच्चों की शारीरिक क्षमता को बढ़ावा देना, महिलाओं, आदिवासियों, दिव्यांगों के बीच खेलों को लोकप्रिय बनाना और खेलों के जरिए शांति और विकास को प्रोत्साहित करने को शामिल किया गया है।

झाँकी का अग्रभाग विभिन्न खेल स्पर्धाओं और खेल सुविधाओं के समग्र विकास के समावेशन को दर्शाता है। झाँकी के मध्य भाग में स्वदेशी खेल मलखम्भ और भारत में लोकप्रिय ओलंपिक खेल, भारोत्तोलन और मुक्केबाजी, दोनों का सजीव प्रदर्शन करते हुए दिखाया गया है। झाँकी के पृष्ठ भाग में जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम की प्रतिकृति के अंदर ग्लोब के ऊपर प्रसिद्ध अर्जुन पुरस्कार की प्रतिकृति प्रदर्शित की गई है जबकि झाँकी के दोनों ओर कराटे और शतरंज के खेल दर्शाए गए हैं। झाँकी के दोनों ओर हमारे खेल हस्तियों, जो अपने–अपने क्षेत्रों में शीर्ष पर पहुँचे हैं, उनको गौरव के साथ दर्शाया गया है।

–युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय

Khelo India

The Department of Sports, Ministry of Youth Affairs & Sports has launched the Khelo India programme in year 2017-18.

Khelo India program aims at integration of sports with education and broad-basing of sports in the country, eventually leading to excellence in Sports. Khelo India program includes creation of Sports infrastructure, coach development, identification and nurturing of sports talent, hosting sports competitions, promoting physical fitness of school children, sports among women, tribals, differently abled and sports for peace and development.

The front part of the tableau depicts inclusiveness of various sports disciplines and holistic development of sports' facilities. Middle part shows live performances of both indigenous sports namely Malkhamb and Olympic sports popular in India namely, weightlifting along with boxing. Rear part of tableau presents famous Arjuna Award Statue over the globe inside the replica of Jawaharlal Nehru Stadium, while the karate and chess disciplines are shown on the sides of the Tableau. Sides of the tableau are also glorified by our sports celebrities who have reached the peak in their disciplines.

-MINISTRY OF YOUTH AFFAIRS & SPORTS

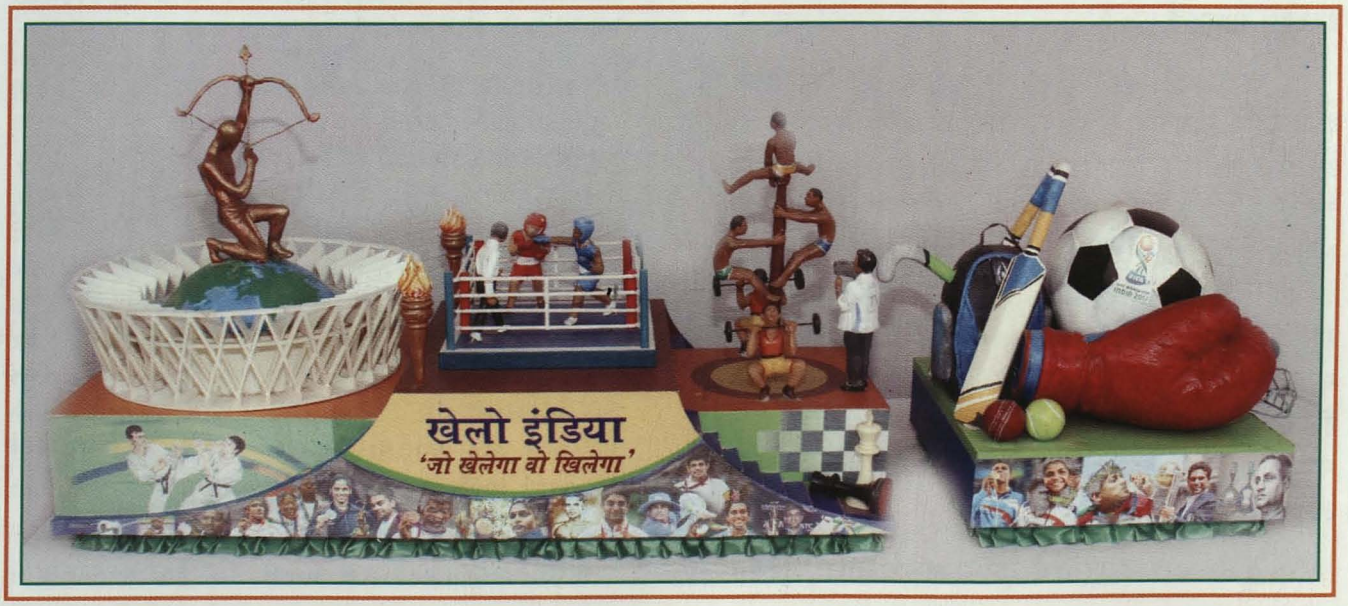

मिश्रित खेती, खुशियों की खेती

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अपनी झाँकी में समेकित खेती प्रणाली (आईएफएस) को प्रस्तुत कर रहा है। आईएफएस न्यूनतम संसाधन प्रतिस्पर्धा और अधिकतम सम्पूरकता के लिए दो अथवा दो से अधिक कृषि उद्यमिता प्रणाली का विवेकपूर्ण मिश्रण है जिससे कि पर्यावरण अनुकूल उत्पादन को बढ़ाया जा सके, रोजगार, आय और परिवार में पोषण को बढ़ाया जा सके।

हमारे देश में फसल और पशुपालन आधारित खेती पद्धति प्रचलित है। यह पद्धति आय को दुगुना करने के अलावा बेहतर भोजन, पोषण और जलवायु अनुकूलता के लिए खेती को बढ़ाने हेतु छोटे और सीमांत किसानों के लिए बेहतरीन साधन है।

झाँकी के अगले हिस्से में अधिक आय सुनिश्चित करने और जलवायु अनुकूल खेती के लिए किसानों की आवश्यकताओं पर आधारित प्रौद्योगिकियों को विकसित करते वैज्ञानिक दिखाए गए हैं। झाँकी के मध्य भाग में किसानों की खुशियों को दिखाया गया है। अंत में पूरे वर्ष किसानों द्वारा की गई मेहनत का फल दिखाया गया है। वे अपनी खुशियाँ सामुदायिक स्तर पर लोक संगीत और नृत्य के साथ उत्सव मनाकर व्यक्त कर रहे हैं। झाँकी के पिछले भाग में पशुपालन को दिखाया गया है। किसान मोबाइल और विभिन्न एप के माध्यम से आधुनिक प्रौद्योगिकियों और सूचना के उपयोग से लाभान्वित हो रहे हैं।

–भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Mishrit Kheti, Khushiyon ki Kheti

Indian Council of Agricultural Research is presenting Integrated Farming System (IFS) model in its tableau. IFS is a judicious mix of two or more agri-enterprise system; for minimum resource competition and maximum complementation so as to support eco-friendly production, enhance employment, income and enrich family nutrition.

The crop and livestock based farming system is popular in our country. The system is ideal means for small and marginal farmers for enhancing agriculture for quality food, nutrition and climate resilient farming system besides doubling of farm income.

In front part, the scientists developing technologies based on farmers' needs to ensure higher income and to support climate friendly agriculture are shown. In central part of the tableau, the happiness of farmers has been shown. Finally the farmers' hard work throughout the year bears fruit. They express their happiness through celebration with folk songs and dance at community level. Rear part of tableau shows Animal Husbandry. The farmers are getting benefitted by the use of modern technologies and Information through mobile and various apps.

–INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

स्वच्छ धन अभियान

राष्ट्र को सम्पन्न एवं साम्यपूर्ण बनाने के लिए, सरकार ने हमारे समाज से काले धन के खतरे के उन्मूलन के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए "स्वच्छ धन अभियान" पर चलाई गई मुहिम को आयकर विभाग की झाँकी में प्रदर्शित किया गया है जो "निष्पक्ष, पारदर्शी और अहस्तक्षेपीय कर प्रशासन के माध्यम से कर अनुपालनकर्ता समाज का निर्माण करेगा, जहाँ प्रत्येक भारतीय कर के भुगतान में गर्व महसूस करेगा।"

झाँकी के अग्रभाग में स्वच्छ धन अभियान में भारतवासियों के सामूहिक समर्थन को प्रदर्शित किया गया है। झाँकी के मध्य भाग में यह प्रदर्शित किया गया है कि बेहिसाब धन के स्वामित्व से केवल मानसिक तनाव और चिंता ही मिलती है। ऑन–लाइन सेवाएं उपलब्ध होने से आय की विवरणी की ई–फाइलिंग और देय कर का भुगतान अब सरल हो गया है। झाँकी के पिछले भाग में प्रदर्शित किया गया है कि आयकर का भुगतान राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में योगदान देता है तथा इससे प्रत्येक नागरिक की जीवनशैली में सुधार होता है। झाँकी में विभाग द्वारा अपनाए गए करदाता के सुलभ दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित किया गया है जहां ईमानदार करदाता को डरने की आवश्यकता नहीं, परंतु प्रौद्योगिकी तथा आंकड़ों के विश्लेषण के उपयोग से कर–अपवंचकों पर इसकी पैनी निगाह है।

–आयकर विभाग

Operation Clean Money

To make the nation prosperous and equitable, the Government has taken various steps to eradicate the menace of Black Money from our society. In line with this vision, the tableau of the Income Tax Department showcases the drive launched by the Department "Operation Clean Money" which endeavours to "Create a tax compliant society through a fair, transparent and non-intrusive tax administration where every Indian takes pride in paying taxes".

The front part of the Tableau shows the collective support of the people of India to the Clean Money drive. The middle part of the tableau depicts that possession of unaccounted wealth only brings mental stress and anxiety. Thanks to availability of online services, e-filing of return of income and payment of due tax have become easier. The rear part of the tableau showcases that income tax paid contributes to the nation-building process and improves every citizen's quality of life. The tableau also depicts the taxpayer friendly approach followed by the Department where the honest taxpayer has nothing to fear but it has an eagle's eye on tax evaders through use of technology and data analytics.

–INCOME TAX DEPARTMENT

दीपावली

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की पुष्प झाँकी भारत के सबसे बड़े उत्सवों में से एक "दीपावली" का चित्रण कर रही है। यह पर्व अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई, अज्ञानता पर ज्ञान का और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है।

दीपावली उत्सव के समय घर की छतों, दुकानों और कार्यालयों तथा बाहरी दरवाजों और खिड़कियों को लाखों दीपों को रोशनी से सजाया जाता है जो विश्व में लोगों को एकता के सूत्र में बांधती है। यह प्रकाश हमारे घरों और दिलोदिमाग को दीप्यमान करता है तथा हमें अच्छे कार्यों के प्रति समर्पित होने की शक्ति देता है।

सम्पूर्ण झाँकी भारत की प्राचीन वास्तुकला के साथ ही दीपावली पर्व को मनाए जाने को प्रदर्शित कर रही है। झाँकी के अग्रिम भाग में पारंपरिक दीपकों एवं फूलों से बनी रंगोली प्रदर्शित की जा रही है। झाँकी के पिछले और ऊपरी भाग में प्रसन्नता एवं उमंग से भरे पर्व को मिट्टी के रंगीन दीपकों द्वारा की गई सजावट से दर्शाया गया है। झाँकी प्राकृतिक रंगों के फूलों से तैयार की गई है।

–केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Deepawali

CPWD floral tableau depicts one of the India's biggest festivals i.e. Deepawali. It signifies the victory of light over darkness, good over evil, knowledge over ignorance and hope over despair.

Deepawali celebration includes millions of lights shining on housetops, shops and offices, outside doors and windows integrating all the people around the world. These lights illuminate our homes and hearts and empower us to commit ourselves to good deeds.

The entire tableau displays ancient architecture of India and the celebration of Deepawali. The front part of the tableau displays traditional diyas and flower rangoli. The back and top side of the tableau shows the decoration by earthen diyas with celebration of festival with happiness and joy. The tableau is crafted in flowers in their natural colours.

–CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2017 के विजेता

नाम	राज्य
कुमारी नाजिया@	उत्तर प्रदेश
स्व. कुमारी नेत्रावती एम. चव्हान*	कर्नाटक
मास्टर करनबीर सिंह**	पंजाब
मास्टर बेट्श्वाजॉन पेनलांग***	मेघालय
कुमारी ममता दलाई***	ओडिशा
मास्टर सेबासटियन विनसेंट***	केरल
कुमारी लक्ष्मी यादव	छत्तीसगढ
कुमारी मनशा एन.	नागालैण्ड
मास्टर शेंगपॉन कोनयक	नागालैण्ड
मास्टर योकनेई	नागालैण्ड
मास्टर चिंगई वांग्सा	नागालैण्ड
कुमारी समृद्धि सुशील शर्मा	गुजरात
मास्टर जोनुनतुआंगा	मिजोरम
मास्टर पंकज सेमवाल	उत्तराख्ण्ड
मास्टर नदाफ इजाज अब्दुल रॉफ	महाराष्ट्र
स्व. कुमारी लोकराकपाम राजेश्वरी चनु	मणिपुर
स्व. मास्टर एफ. ललछंदामा	मिजोरम
मास्टर पंकज कुमार माहंत	ओडिशा

@ भारत पुरस्कार
* गीता चोपड़ा पुरस्कार
** संजय चोपड़ा पुरस्कार
*** बापू गायधानी पुरस्कार

Winners of The National Bravery Awards 2017

Name	State
Km. Nazia@	Uttar Pradesh
Late Km. Netravati M. Chavan*	Karnataka
Master Karanbeer Singh**	Punjab
Master Betshwajohn Peinlang***	Meghalaya
Km. Mamata Dalai***	Odisha
Master Sebastian Vincent***	Kerala
Km. Laxmi Yadav	Chhattisgarh
Km. Mansha N	Nagaland
Master Shangpon Konyak	Nagaland
Master Yoaknei	Nagaland
Master Chingai Wangsa	Nagaland
Km. Samridhi Sushil Sharma	Gujarat
Master Zonuntluanga	Mizoram
Master Pankaj Semwal	Uttarakhand
Master Nadaf Ejaj Abdul Rauf	Maharashtra
Late Km. Loukrakpam Rajeshwori Chanu	Manipur
Late Master F. Lalchhandama	Mizoram
Master Pankaj Kumar Mahanta	Odisha

@ Bharat Award
* Geeta Chopra Award
** Sanjay Chopra Award
*** Bapu Gaidhani Award

भारत के रंग

स्वागत गान, जिसका शीर्षक 'भारत के रंग' है, रानी चेनम्मा सर्वोदय कन्या विद्यालय, जहांगीर पुरी, दिल्ली की 150 छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। पाँच भारतीय राज्यों, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के लोक नृत्यों के माध्यम से विद्यार्थियों ने भारत की बहुरंगी, विविध और अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह नृत्य न केवल भारत की भौगोलिक छटा और विविधता को प्रस्तुत करता है, बल्कि सार्वभौमिक प्रेम और भाईचारे का संदेश भी देता है।

–रानी चेनम्मा सर्वोदय कन्या विद्यालय, जहांगीर पुरी, दिल्ली

Bharat Ke Rang

The welcome song titled "Bharat Ke Rang" is being presented by 150 girls students of Rani Chennama Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Jahangirpuri, Delhi. Through the folk dances of 5 Indian States namely Haryana, Punjab, Gujarat, Maharashtra and West Bengal, students have endeavored to represent multicolored, varied and enigmatic cultural heritage of India. This dance not only showcases the geographical bounties and diversity of India but also gives the message of universal love and brotherhood.

–RANI CHENNAMMA SARVODAYA KANYA VIDYALAYA, JAHANGIRPURI, DELHI

भारत–आसियान साझेदारी के 25 वर्षों का उत्सव

देश के 69वें गणतंत्र दिवस समारोह में राजपथ पर माउंट आबू पब्लिक स्कूल के प्रतिभाशाली छात्र एक दृष्टिकोण, एक पहचान और एक समुदाय को प्रस्तुत करेंगे। इस प्रस्फुटित नृत्य प्रदर्शन में भारत और दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ के बीच साझा किए गए मजबूत और शक्तिशाली संबंधों के शानदार 25 वर्षों के उत्सव को प्रस्तुत किया गया है।

स्कूल के 150 ऊर्जावान छात्रों का समूह, आसियान में सम्मिलित 10 विभिन्न देशों की वेश–भूषा के साथ विविध रंग के भारतीय वेश–भूषा पहने हुए, एकता, सद्भाव और भाईचारे की भावना का जादू फैला कर सभी को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं।

–माउंट आबू पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

Celebrating 25 years of ASEAN- India Partnership

One vision, one identity and one community is what the dynamic and charismatic students of Mount Abu Public School, Rohini present on 69th Republic Day Celebration of the country at Rajpath. The scintillating dance presentation celebrates 25 glorious years of the strong and powerful relationship shared between India and Association of South-East Asian Nations.

The group of 150 energetic students of the School, dressed in the costume of 10 different countries included in ASEAN along with the multihued Indian attire spread magic and enthrall all with a spirit of unity, harmony and brotherhood.

–MOUNT ABU PUBLIC SCHOOL, ROHINI, DELHI

शिक्षित भारत, सशक्त भारत

"शिक्षा हमारी पहचान है, हम भारत की शान हैं,
घर–घर में शिक्षा का दीप जले, अब यही हमारा पैगाम है"

गणतंत्र दिवस के इस शुभ अवसर पर ऑक्सफोर्ड फाउंडेशन स्कूल, नजफगढ़ के 155 छात्र शिक्षा और ज्ञान की शक्ति कैसे हमारे देश को सशक्त बनाने के साथ–साथ विश्व नेता के रूप में उभरने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, इस तथ्य को यहाँ अति प्रसन्नता और उत्साह के साथ व्यक्त कर रहे हैं।

–ऑक्सफोर्ड़ फाउंडेशन स्कूल,
नजफगढ़, दिल्ली

Shikshit Bharat, Shashakt Bharat

"Shiksha Humari Pehchan hai, Hum Bharat Ki Shaan Hain,

Ghar Ghar Mein Shiksha ka Deep Jale, Ab Yahi Hamara Paigam Hai".

On this auspicious occasion of Republic day, 155 students of Oxford Foundation School, Najafgarh are here to express with extreme pleasure and zeal, how the power of knowledge and education is playing a vital role in empowering our nation, making it emerge as a world leader.

–OXFORD FOUNDATION SCHOOL
NAJAFGARH, NEW DELHI

बरेदी लोक नृत्य

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर के 160 छात्र–छात्राओं द्वारा मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के बरेदी लोक नृत्य को प्रस्तुत किया जा रहा है।

बरेदी लोक नृत्य मवेशी–कृषि संस्कृति से संबंधित है। बरेदी नृत्य दीवाली (कार्तिक अमावास्या) से शुरु होने वाले पखवाड़े के दौरान प्रस्तुत किया जाता है। नर्तक समूह में संगठित होते हैं और वे इस मौके के लिए विशेष रूप से एक आकर्षक पोशाक पहनते हैं। इसमें एक कलाकार लय के साथ एक द्विपंक्तिबद्ध कविता गाता है और अन्य प्रतिभागी एक जोरदार और निपुण प्रदर्शन के साथ बरेदी नृत्य पेश करते हैं। यह नृत्य गोवर्धन पर्वत की पूजा के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यह माना जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने भी स्वयं अपने साथियों के साथ इन बरेदी नृत्यों में भाग लिया था।

–दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र,
नागपुर, महाराष्ट्र

Baredi Folk Dance

160 students from South Central Zone Cultural Centre, Nagpur present the Baredi Folk Dance of Bundelkhand region of Madhya Pradesh.

The Baredi folk dance is closely related to the cattle-farm culture. It is presented during the fortnight commencing from Deepawali (Kartik Amavasya). The dancers are organized in groups, they wear a typical attractive dress specially meant for this occasion. One of the performers with a rhythm sings two lined poem and the other participants present a vigorous and sprightly performance. This dance is presented with a worship of Gowardhana Parvat. It is believed that Lord Krishna himself participated in these Baredi Dances along with his mates.

–SOUTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE
NAGPUR, MAHARASHTRA

संगराई मोग नृत्य

पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर के 150 छात्र–छात्राओं द्वारा त्रिपुरा के मोग जनजातीय समुदाय के लोक नृत्य "संगराई मोग नृत्य" को प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह नृत्य चैत्र माह (अप्रैल), जो बंगाली कैलेंडर वर्ष का अंतिम माह होता है, के अवसर पर प्रस्तुत किया जाता है जो त्रिपुरा के मोग समुदाय के लिए विशेष उत्सव का अवसर होता है। नव–वर्ष को आमंत्रित करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सामान्यतः मोग समुदाय के लोगों और विशेषतः युवक और युवतियों द्वारा इस दिवस को मनाया जाता है। इस दिन पवित्र घड़ों के माध्यम से जल ले जाया जाता है और सम्मानित वयक्तियों को इस जल से स्नान करने की अनुमति दी जाती है। युवक और युवतियां एक परम्परागत जलक्रीड़ा "खोयांग" का आयोजन करते हैं जिसे एक विशेष लय में प्रस्तुत किया जाता है। यह उत्सव तीन दिन तक चलता है। इस पवित्र अवसर पर मोग समुदाय के युवा लोग अपने सिर पर पवित्र "मनोकामना वृक्ष" (कल्पतरु) धारण करके नृत्य और गायन करते हुए एक–दूसरे के घर जाते हैं।

–पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र
दीमापुर, नागालैण्ड

Sangrai Mog Dance

150 students from North East Zone Cultural Centre, Dimapur present the Sangrai Mog Dance of Mog tribal community of Tripura.

It is performed on the occasion of Sangrai festival during the month of Chaitra (in April), which is the last of the Bengali calendar year and is the occasion of special festival of the Mog Community of Tripura. The people of the Mog Community, in general, and the young boys and girls in particular, celebrate the day through cultural programmes to invite the New Year. On this day water is carried through auspicious pitchers and respected persons are allowed to take bath with the water. The young boys and girls indulge in aquatic traditional "Khouyang" which is played with a specific rhythm. The festival continues for three days. The youths of the Mog community on this auspicious occasion move about from one house to another dancing and singing with pious "wish yielding Tree" (Kalapataru) on head.

–NORTH EAST ZONE CULTURAL CENTRE
DIMAPUR, NAGALAND

धन्यवाद

Thank You

Printed by : All Time Offset Printers
F-406, Sector-63, NOIDA - 201 307
Tel.: +91 120 425 4983 | 98101 10914 | 99717 99804
E-mail : info@alltimeoffset.com | www.alltimeoffset.com

Ministry of Defence
Ceremonials Division